SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

भारतीय किसान की स्थिति और मूल समस्याएं

रामप्रसाद दुबे, शोधार्थी, जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन विभाग
शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जुनवानी, दुर्ग, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रामप्रसाद दुबे, शोधार्थी
E-mail : rpdubey.ryp@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/03/2025
Revised on : 21/05/2025
Accepted on : 30/05/2025
Overall Similarity : 00% on 22/05/2025

शोध सार

भारत संरचनात्मक दृष्टि से गांव का देश है और सभी ग्रामीण समुदायों में अधिक मात्रा में कृषि कार्य किया जाता है इसलिए भारत को कृषि प्रधान देश की संज्ञा मिली हुई है। लगभग 70 प्रतिशत भारतीय किसान हैं वह भारत देश के रीड की हड्डी के समान है, लेकिन भारतीय किसान गरीब है, उनकी गरीबी पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। किसी को दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं हो पता वे अपने बच्चों को शिक्षा भी नहीं दे पाते। वह अपने बेटे और बेटियों को ठीक से पोशाक तक खरीद कर नहीं दे पाते, वह अपनी पत्नी को गहने पहनने का सुख नहीं दे पाते हैं। भारतीय किसानों को गांव के दलाल द्वारा अक्सर परेशान किया जाता है इसलिए वे अपने ही उपज का आनंद नहीं ले पाते हैं। इस शोध पत्र में भारतीय किसानों की स्थिति किस तरह की है और उनकी समस्याएं किस–किस प्रकार की हैं इस पर केंद्रित किया गया है।

मुख्य शब्द

किसान आंदोलन, समर्थन मूल्य, फसल लागत, बंजर जमीन, मूल्य निर्धारण, कच्चा माल.

भारतीय किसानों की पष्ठभूमि

भारतीय कृषक एक ऐसा व्यक्ति है जो कृषि कार्य में लगा हुआ है साथ ही भोजन या कच्चा माल के लिए जीवो को भी पाल रहा है। यह शब्द साधारणता उन लोगों पर लागू होता है जो खेती की फसलों फलए धन कुकुट या अन्य पशुधन को बढ़ाने का कुछ संयोजन करते हैं। वहीं इन किसानों से संबंधित कई किसान आंदोलन भी हुए हैं जिसमें चंपारण 1917 खेड़ा सत्याग्रह, 1918 बारडोली सत्याग्रह आंदोलन, 1925 तेभागा आंदोलन, 1946 से 1947 और डेक्कन दगे, 1875 शामिल है। इन आंदोलन ने किसानों को समग्र राष्ट्रवादी आंदोलन में

लामबंद किया जिसके कारण 1947 में भारत को आजादी मिली, जबकि 2021–22 की कृषि वर्ष में कृषि कार्यों से जुड़े परिवार की मासिक आय 13661 थी जबकि एक और गैर कृषि परिवार की मासिक आय 11438 थी। एक कृषि परिवार की आय संयुक्त राष्ट्रीय औसत ग्रामीण परिवार की मासिक आय यानी 12698 रुपए से भी अधिक थी।

किसानो की समस्याएं

किसानो की सबसे बड़ी समस्या उनके कृषि उत्पादों की कम कीमत है। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि उत्पादन पर आधारित उचित मूल्य निर्धारण और कृषि मजदूरी को औद्योगिक मजदूरी के बराबर करना किसानों के लिए फायदेमंद हो सकता है। अब एक नजर किसान की समस्या पर डालते हैं:

भूमि पर अधिकार

देश में कृषि भूमि के मलिक आना हक को लेकर विवाद सबसे बड़ा है। असमान भूमि वितरण के खिलाफ किसान कई बार आवाज उठाते रहे हैं। जमीनों का एक बड़ा हिस्सा किसान और महाजन और साहूकारों के पास है जिस पर छोटे किसान काम करते हैं। ऐसे में अगर फसल अच्छी नहीं होती तो छोटे किसान कर्ज में डूब जाते हैं।

फसल पर सही मूल्य

किसानों की एक बड़ी समस्या यह भी है कि उन्हें फसल का सही मूल्य नहीं मिल पाता। वहीं किसानों को अपना माल (उपज) बेचने के तमाम कागजी कार्रवाई भी पूरी करनी पड़ती है। मसलन कोई किसान सरकारी केंद्र पर किसी उत्पाद को बेचना चाहे तो उसे गाँव के अधिकारी से एक कागज चाहिए होगा। ऐसे में कई बार कम पढ़े–लिखे किसान औने–पौने दामों पर अपना फसल या माल को बेचने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

अच्छे बीज

अच्छी फसल के लिए अच्छे बीजों का होना बेहद जरूरी है, लेकिन सही वितरण तंत्र ना होने के चलते किसान की पहुंच में यह महंगे और अच्छे बीज नहीं होते हैं, इसके चलते उन्हें कोई लाभ नहीं मिल पाता और फसल की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

सिंचाई व्यवस्था

देश में सटीक मानसून की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती इससे देश के तमाम हिस्सों में सिंचाई व्यवस्था की उन्नत तकनीक का प्रसार नहीं हो पता है। उदाहरण के लिए पंजाब, हरियाणा और पश्चिम उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में सिंचाई के अच्छे इंतजाम हैं, लेकिन देश का एक बड़ा हिस्सा ऐसा भी है जहां कृषि मानसून पर निर्भर करती है। वहीं भूमिगत जल के गिरते स्तर ने भी किसान की समस्याओं में इजाफा कर दिया है।

मशीनीकरण का अभाव

कृषि क्षेत्र में अब उन मशीनों का प्रयोग होने लगा है लेकिन अब भी कुछ इलाके ऐसे हैं जहां एक बड़ा काम अभी भी किसान स्वयं करते हैं। वह कृषि भूमि में पारंपरिक तरीकों से कृषि कार्य पर इस्तेमाल करते हैं। खासकर ऐसे मामले छोटे और सीमांत किसानों के साथ अधिक देखने को मिलता है। इसका असर भी कृषि उत्पादों की गुणवत्ता और लागत पर साफ नजर आता है।

भंडारण सुविधाओं का अभाव

भारत के ग्रामीण इलाकों में अच्छे भंडारण की सुविधाओं की कमी है ऐसे में किसानों पर जल्द फसल का सौदा करने का दबाव होता है और कई बार किसान होने पर दामों में फसलों का सौदा कर लेते हैं। भंडारण सुविधाओं को लेकर न्यायालय ने भी कई बार केंद्र और राज्य सरकारों को फटकार लगाई है।

परिवहन की परेशानी

भारतीय कृषि की तरक्की में एक बड़ी बाधा अच्छी परिवहन व्यवस्था की कमी है। आज देश के कई गांवों और केंद्र ऐसे हैं जो बाजारों और शहरों से नहीं जुड़े हैं। वहीं कुछ सड़कों पर मौसम का भी खास प्रभाव रहता है। ऐसे में किसान स्थानीय बाजारों में कम मूल्य पर सामान बेचते हैं कृषि क्षेत्र को इस समस्या से बाहर आने के लिए बड़ी धनराशि के साथ मजबूत राजनीतिक प्रतिबद्धता चाहिए।

पूंजी की कमी

भारत में ज्यादातर किसानों के पास कृषि में निवेश करने के लिए पूंजी की कमी होती है आज भी देश के ज्यादातर किसानों को स्थिर रूप में लोन का लाभ नहीं मिल पाता है। कई बार किसानों के पास इतनी भी पूंजी नहीं होती कि वह खाद बीज जैसे का भी प्रबंध कर सकें इसका परिणाम यह होता है कि किस समय से फसल का उत्पादन नहीं कर पाते हैं बल्कि पोषक तत्वों की कमी के कारण पर्याप्त गुणवत्ता की कमी हो जाती है इसके साथ ही किस को निजी लोगों से भारी ब्याज दर पर कर्ज लेना पड़ता है जिससे उसकी समस्याएं काम नहीं होती हैं।

कृषि योग्य भूमि की उपलब्धता

भारतीय किसानों के पास एक बड़ी आबादी के पास बहुत कम मात्रा में कृषि योग्य भूमि उपलब्ध है इसका एक बड़ा कारण बहुराष्ट्रीय जनसंख्या घनत्व भी है। इसके परिणाम स्वरूप कृषि योग्य भूमि के लिए किसने को लाभ योजना का माध्यम ना शेयर बाजार के बिना निर्वाह करना पड़ता है जिसमें वह किसी तरह अपना और परिवार का परिवार का निर्वहन कर पाते हैं। भारतीय कृषि क्षेत्र में प्रचंड बेरोजगारी की भी एक समस्या है।

प्राकृतिक आपदा का प्रभाव

भारत में हर साल अलग–अलग जिलों में अग्नि समुद्री तुफान, अतिवृष्टि, बर्फवारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इन जोखिमों को कम करने के लिए खेत पर फसल बीमा उपलब्ध कराया गया है हालांकि इसका वास्तविक लाभ अब तक समर्थ किसानों को नहीं मिल पाया है। इसका लाभ अधिकांश लोगों तक पहुंचे इसके लिए उपाय किए जाने चाहिए।

निष्कर्ष

आजादी के 75 वर्ष बाद भी किसान की समस्या निरंतर बनी हुई है वह तमाम सुधारो के बावजूद खुशहाल नहीं हो पा रहा है। आर्थिक तंगी से जूझते हुए फसल उगाने का कार्य कर रहा है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि किसान को उनकी समस्या से छुटकारा दिलाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारी मजबूत और ठोस रणनीति बनाएं जो राजनीति से लग रहे ताकि किसानों के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके। वहीं किसान कर्ज मुक्ति फसल उत्पादन के लिए बेहतर योगदान कर सके। सरकार समस्या के समाधान में भेदभाव ना करें। बुनियाद में जाकर मजबूती से समस्या का निष्पादन करने में किसान का सहयोग करें।

भारत की आजादी को कई दशक बीत चुके हैं, हाल ही में हमने 74वां गणतंत्र दिवस मनाया है। 1947 से अब तक देश के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का विकास हुआ। आज भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम विश्व के सफलतम अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल है। भारतीय सेवा विश्व की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था में से एक है और भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था में से एक है। अन्य क्षेत्रों में भी भारत नियमित रूप से विकास की नई कहानी लिख रहा है, ऐसे में किसान विकास की दौड़ में कहीं पीछे रह गया है खाद्य सुरक्षा, ग्रामीण रोजगार जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला किसान आज भी उसे स्थिति में नहीं है जिसमें होना चाहिए, नामांकित होना चाहिए। इसका परिणाम यह है कि कृषि पर लोकतांत्रिक देश के करोड़ों लोग आज भी बेहद अभाव में जीवन जीने के लिए मजबूर हैं।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी, अरुण कुमार (2022) *संकट में खेती,* वाणी प्रकाशन, 21 ए दरियागंज, नई दिल्ली।
2. कौर, बलवंत; वर्मा, विभाग; शर्मा, अपराजिता (2021) *किसान आंदोलन लहर भी संघर्ष भी जश्न भी,* नवरुण प्रकाशन, सी 303 जनसत्ता अपार्टमेंट, सेक्टर 9, वसुंधरा, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
3. पटेल, माधव (2021) *किसान,* संकल्प प्रकाशन, नई दिल्ली।

****